17

सलाम और टिप्पणियां

कुलुस्सियों 4:1018

4:10–14 पौलुस के सभी सहयात्रियों के नाम ''यीशु जो युस्तुस कहलाता है'' को छोड़ फिलेमोन 23, 24 में भी मिलते हैं। पौलुस ने केवल दो और पत्रों में लोगों की एक लम्बी सूची दी। (रोमियों 16:1–23; 1 कुरिन्थियों 16:10–20)। इन पत्रों में उन लोगों के नाम दिए गए जिन्हें उस ने सलाम भेजा था, परन्तु कुलुस्सियों के पत्र में वह कुलुस्से के लोगों को उन लोगों की ओर से सलाम भेज रहा था, जो रोम में उनके साथ थे। इन लोगों ने उसकी सेवा की थी, उसके साथ दूसरे लोगों को सिखाया था और उसके साथ जेल में रहे होंगे। यदि उसके यह पत्र लिखते समय वे उसके साथ थे तो बेशक वे सलाम में पौलुस से अपना नाम लिखवाना चाहते होंगे।

पौलुस के छह सहकर्मियों ने अपना व्यक्तिगत सलाम भेजा। तीमुथियुस का नाम नहीं है क्योंकि 1:1 में पौलुस के साथ उसका नाम है। आयत 10 उसके मौसेरे भाई मरकुस की पहचान कराते हुए बरनबास का नाम बताती है।

पहले तीन भाई जिनकी ओर से पौलुस ने सलाम भेजा यहूदी पृष्ठभूमि वाले थे (''खतना किए हुए लोगों में से''; आयत 11)। पौलुस के साथ केवल वही यहूदी मसीही थे, जो सहकर्मी थे। सहकर्मियों की उसकी सूची में अगले तीन जन खतनारहित थे, यानी वे अन्यजाति मसीही थे।

पौलुस ने कुलुस्सियों को यह आश्वस्त करने के लिए कि यहूदियों और अन्यजाति भाइयों ने हाथ मिला लिए थे और वे साथ मिलकर प्रभु के लिए परिश्रम कर रहे थे, अपने सहकर्मियों की राष्ट्रीयताओं में अन्तर किया। शायद वह कुलुस्सियों को बताना चाहता था कि अन्यजाति मसीही भी यदि अधिक नहीं तो सुसमाचार के फैलाने में यहूदी मसीही लोगों की तरह ही गम्भीरता से जुड़े हुए थे।

कुलुस्से की कलीसिया, जिसके अधिकतर सदस्य खतनारहित थे उन्हें प्रोत्साहित किया जा सकता था कि उनके साथी अन्यजाति यीशु की सेवा कर रहे थे। पौलुस ने अपने आस–पास केवल यहूदी विश्वासियों को ही नहीं रखा था बल्कि वह सब लोगों के साथ काम कर रहा था और काम करने को तैयार था। वे ''परमेश्वर के राज्य'' के लिए मिलकर काम करते थे (4:11)।

डेविड एम. हेय ने कुलुस्सियों और फिलेमोन के नाम पत्रों में मसीही लोगों की सूचियों में समानताओं और भिन्नताओं की ओर ध्यान दिलाया है:

> कुलुस्सियों 4 की तरह फिलेमोन 23–24 में इपफ्रास, अरिस्तर्खुस, देमास और लूका (फिलेमोन 2 में अरखिपुस और फिलेमोन 10 में उनेसिमुस का नाम है) की ओर से दिए गए सलाम मिलते हैं। दूसरी ओर फिलेमोन, तुखिकुस, यीशु यूस्तुस, नुमफा का उल्लेख नहीं करता और कुलुस्सियों में फिलेमोन और अपफुफिया का उल्लेख नहीं है।[1]

नामों का क्रम दोनों पत्रों में भिन्न है। पौलुस ने इन लोगों का नाम अपनी सोच या पाठकों की दृष्टि में उनके महत्व के अनुसार दिया हो सकता है। फिलेमोन 23, 24 में उसने उनके नाम इस प्रकार दिए: इपफ्रास, मरकुस, अरिस्तर्खुस, यीशु यूस्तुस, देमास और लूका। कुलुस्सियों 4:10-14 में अरिस्तर्खुस, मरकुस, यीशु यूस्तुस, इपफ्रास, लूका और देमास का नाम तुखिकुस और उनेसिमुस के बाद आता है।

सहकर्मियों की ओर से सलाम (4:10-14)

[10]अरिस्तर्खुस जो मेरे साथ कैदी है, और मरकुस जो बरनबास का भाई लगता है (जिस के विषय में तुम ने आज्ञा पाई थी कि यदि वह तुम्हारे पास आए, तो उस से अच्छी तरह व्यवहार करना।) [11]और यीशु जो यूस्तुस कहलाता है, तुम्हें नमस्कार कहते हैं। खतना किए हुए लोगों में से केवल ये ही परमेश्वर के राज्य के लिए मेरे सहकर्मी और मेरी शान्ति का कारण रहे हैं। [12]इपफ्रास जो तुम में से है, और मसीह यीशु का दास है, तुम्हें नमस्कार कहता है और सदा तुम्हारे लिए प्रार्थनाओं में प्रयत्न करता है, ताकि तुम सिद्ध होकर पूर्ण विश्वास के साथ परमेश्वर की इच्छा पर स्थिर रहो। [13]मैं उसका गवाह हूं, कि वह तुम्हारे लिए और लौदीकिया और हियरा पुलिस वालों के लिए बड़ा परिश्रम करता रहता है। [14]प्रिय वैद्य लूका और देमास का तुम्हें नमस्कार।

''अरिस्तर्खुस जो मेरे साथ कैदी है'' (4:10)

अरिस्तर्खुस जिसका नाम मूलतया ''बढ़िया हाकिम'' है, मकिदुनिया में थिस्सलुनीके का वासी था। वह पौलुस की तीसरी मिशनरी यात्रा के अधिकतर समय उसके साथ रहा था। नमस्कार भेजने वालों में उसके नाम का होना उसके लिए पौलुस के सम्मान को दर्शा सकता है। उसने अपनी पहली मुलाकात के बाद पौलुस के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध बना लिया होगा क्योंकि वह और लूका ही पौलुस के साथ रोम की यात्रा पर गए लगते हैं (प्रेरितों 27:2)।

मेरे साथ कैदी (*sunaichmalōtos mou*) वाक्यांश का अनुवाद अक्षरश: करने पर अरिस्तर्खुस का वर्णन पौलुस का ''युद्ध में सह-कैदी'' के रूप में होता है। इसी वाक्यांश का इस्तेमाल रोमियों 16:7 में पौलुस के कुटुम्बियों अन्द्रुनीकुस और यूनियास के लिए हुआ है। पौलुस ने फिलेमोन के नाम अपने पत्र में इस प्रकार से इपफ्रास की बात न कि अरिस्तर्खुस की। कुलुस्सियों में इस शब्द रचना से शायद यह संकेत मिलता है कि अरिस्तर्खुस पौलुस के साथ शायद कैद में था और उसका कारण भी वही था जो कि वह सुसमाचार सुनाता था। यीशु की सेवा के लिए कैद हुए या आत्मिक कैदी बनने वाले के लिए इसका अर्थ प्रतीकात्मक अर्थ में होता है। इसका अर्थ अक्षरश ही लिया जाता है। पौलुस अपने आपको एक सिपाही के रूप में देखता था जो कैद में था क्योंकि वह यीशु के लिए लड़ रहा था। मसीह के लिए आत्मिक युद्ध में अरिस्तर्खुस पौलुस के साथ-साथ था।

अरिस्तर्खुस का नाम पहले प्रेरितों के काम की पुस्तक में मिलता है। इफिसुस में उसका उल्लेख पौलुस के विरुद्ध दंगा भड़कने के समय वह इफिसुस में था। उसे अगयुस को भीड़ ने

पकड़ लिया था और उन्हें रंगशाला में ले गए थे (19:29)। मकिदुनिया में से पौलुस के साथ जाने के बाद वह त्रोआस में पौलुस की राह देखने के लिए दूसरों के साथ आगे गया (20:4, 5)। वहां से वह और सिकंदुस प्रतिनिधि पौलुस के साथ थिस्सलुनीके से गए थे, जब पौलुस यरूशलेम के भाइयों के लिए सहायता लेकर गया था (देखें 24:17)। दो साल बाद (24:27) वह और लूका पौलुस के साथ कैसरिया से रोम की ओर गए जब वह कैदी था (27:1, 2)। वह रोम में रहा या तो पौलुस के सेवक के रूप में या उसके सहकैदी के रूप में। कुछ लोगों का विचार है कि वह मूरा थिस्सलुनीके को लौट गया, जहां से पौलुस और लूका ने जहाज बदले थे (27:5, 6)। यह पक्का नहीं है क्योंकि पौलुस के कुलुस्सियों के नाम पत्र लिखने के समय वह रोम में पौलुस के साथ था।

"और मरकुस जो बरनबास का भाई लगता है (जिस के विषय में तुम ने आज्ञा पाई थी कि यदि वह तुम्हारे पास आए, तो उस से अच्छी तरह व्यवहार करना)" (4:10)

पौलुस की तरह (प्रेरितों 13:9) मरकुस के दो नाम थे (प्रेरितों 12:25)। उसका इब्रानी नाम यूहन्ना था, जो मूलतया "परमेश्वर अनुग्रहकारी है" और उसका यूनानी नाम "मरकुस" था जिसका अर्थ है "बड़ा हथौड़ा।" पौलुस उसे पतरस की तरह (1 पतरस 5:13), केवल उसके यूनानी नाम से बुलाता था (कुलुस्सियों 4:10; 2 तीमुथियुस 4:11; फिलेमोन 24)। अरिस्तर्खुस के साथ मरकुस ने भी अपना सलाम भेजा।

लूका ने मरकुस का परिचय "यूहन्ना, जो मरकुस कहलाता है" के रूप में करवाया (प्रेरितों 12:12, 25; देखें 15:37) और बाद में उसे केवल "यूहन्ना" कहा (13:5, 13)। यरूशलेम के मसीही लोग उसकी माता मरियम के घर में पतरस के लिए प्रार्थना करने के लिए इकट्ठा हुए थे जब वह कैद हो गया था। पतरस जेल से छूटने के बाद उसी घर में गया था, जो इस बात का संकेत है कि मसीही लोगों के इकट्ठा होने के लिए यह प्रसिद्ध सलाम था (प्रेरितों 12:12)। मरकुस के पिता के विषय में कुछ नहीं कहा गया।

मरकुस ने पौलुस और अपने मौसेरे भाई बरनबास के साथ पहली मिशनरी यात्रा आरम्भ की। उनके साथ कुपरुस टापू पर सलमीस और पाफुस में, फिर महाद्वीप पर पम्फुलिया में पिरगा में जाने (प्रेरितों 13:13) के बाद वह यरूशलेम में लौट गया (प्रेरितों 13:5–13)।

पक्का पता किसी को नहीं है कि मरकुस काम छोड़कर क्यों गया, परन्तु इसके कारण कई बताए गए हैं। क्या उसे ईर्ष्या हो गई थी क्योंकि पौलुस ने नेतृत्व पौलुस के हाथ में चला गया था और बरनबास की जगह वह मुख्य वक्ता बन गया था। क्या पौलुस की बीमारी (गलातियों 4:13–15) और किसी बीमारी के होने की सम्भावना से डर गया था? क्या बहुत से खतरे जैसे 2 कुरिन्थियों 11:24–27 में पौलुस पर आने वाले संकट, घर से दूर रहने वाले जवान के लिए विशेष रूप में खतरा लग रहे थे? क्या काम इतना सफल नहीं था जितनी उसे आशा थी? उसके घर लौट जाने का कारण इनमें से कोई भी हो सकता है; परन्तु पहली सम्भावना सबसे कम लगती है।

मरकुस इतनी जल्दी काम को छोड़ गया कि इस कारण पौलुस को लगा कि वह एक और मिशन ट्रिप पर जाने के लिए तैयार नहीं है। इससे पौलुस और साइप्रस वासी बरनबास के बीच

झगड़ा हो गया (प्रेरितों 4:36), जो समझदारी से अपने भाई मरकुस को मिशन कार्य के लिए अपने जाने-पहचाने इलाके में ले गया (प्रेरितों 15:39)। पौलुस के मन में मरकुस के लिए कोई शत्रुता नहीं थी। परन्तु उसे लगा कि परिपक्व होकर और मज़बूत बनने की आवश्यकता है। बरनबास ने भी इस बात को समझा और दूसरों को प्रोत्साहित करने वाले काम दिए जाने वाले व्यक्ति की तरह शायद अपने आपको मसीह के अच्छे सेवक में धीरज से ढालने की सहायता के लिए मरकुस के साथ रहा। यदि यह बात हुई तो बरनबास के प्रयास सफल हुए।

जिस प्रकार से पौलुस ने बिना परिचय के बरनबास का उल्लेख किया, उससे संकेत मिल सकता है कि वह कुलुस्से की कलीसिया में, मरकुस से अधिक प्रसिद्ध था। यदि ऐसा है तो मण्डली ने मरकुस में अधिक दिलचस्पी लेनी थी क्योंकि वह "बरनबास का भाई" लगता था।

पाठकों को चाहे इस बात की और व्याख्या की आवश्यकता है कि मरकुस के मन में पौलुस के लिए क्या था, परन्तु पत्र देने वाले और पत्र पाने वाले दोनों को इस बात की समझ थी कि पौलुस की इस बात का अर्थ क्या था, जब उसने लिखा, "जिसके विषय में तुम ने आज्ञा पाई थी।" मरकुस के सम्बन्ध में कुलुस्सियों के साथ पौलुस की बातचीत पहले होती थी, इस कारण उस ने इस पत्र में इसे दोहराया नहीं। उसने कलीसिया को उसे अगुआई देने या उसे रहने का स्थान देकर उसकी देखभाल करने के सम्बन्ध में सलाह शामिल हो सकती है।

पौलुस ने मरकुस के साथ अच्छी तरह व्यवहार (*dechomai*) करने को कहा। इस शब्द का अर्थ किसी अतिथि या पाहुन का आतिथ्य करना है।[2] यह सुनिश्चित किए जाने के लिए कि अतिथि की देखभाल अच्छी तरह से हो, आम तौर पर सिफारिशी चिट्ठियां लिखी जाती थीं (2 कुरिन्थियों 3:1)। ये चिट्ठियां अज्ञात व्यक्ति के आगमन से पूर्व उसे स्वीकार करने वाले पाठकों को प्रोत्साहित करने और उसके लिए पर्याप्त स्थान बनाने के लिए पहले भेज दी जाती थीं।

पौलुस को मरकुस की यात्रा की योजनाओं का पता नहीं था। परन्तु पौलुस भाइयों को पहले से बता देना चाहता था कि उन्हें पता हो कि यदि मरकुस कुलुस्से में आए तो उसकी अच्छी आवभगत हो। कइयों ने पौलुस और बरनबास के बीच झगड़े की बात सुनी होगी और उन्हें समझ में नहीं आता होगा कि मरकुस के साथ दयालुता दिखाकर वे उसकी आवश्यकताओं को पूरी करें या न। पौलुस ने उन्हें आश्वस्त किया कि उससे "अच्छी तरह व्यवहार" करें। फिर वह पौलुस के सहकर्मियों में से एक था और आदर और सहायता पाने के योग्य था। 4:11 में पौलुस की बात "ये ही मेरे सहकर्मी और मेरी शान्ति का कारण रहे हैं" में यूसतुस के साथ मरकुस भी था। वह जवान जिसे पौलुस ने कभी ठुकराया था अब उसके लिए आशीष और प्रोत्साहन देने वाला बन गया था।

इस पत्र के लिखे जाने के समय पौलुस और मरकुस के बीच सम्बन्ध सुधर गया था। मरकुस जेल में उसे देखने के लिए रोम में गया था और कुलुस्सियों और फिलेमोन के नाम पत्र लिखने के समय वह उसके साथ था। उसके विषय में पौलुस ने लिखा कि वह समर्पित "सहकर्मी" (फिलेमोन 24) था, जिस पर गर्व किया जा सकता था और उसकी सिफारिश की जा सकती थी। पौलुस ने उसे फिलेमोन, अपफिया और अरखिपुस को सलाम भेजने वालों में उसका भी नाम लिया (फिलेमोन 1, 2, 23, 24), जो यह सुझाव देता है कि वह उससे व्यक्तिगत रूप में मिला था।

बाद में पौलुस और मरकुस थोड़ी देर के लिए अलग हुए थे। परन्तु रोम में पौलुस के दूसरे कारावास के दौरान जल्द ही उसे उस सहायता की समझ आ गई, जो मरकुस से मिल सकती थी और उसने उसे बुला भेजा। उसने तीमुथियुस को लिखा, ''केवल लूका मेरे साथ है: मरकुस को लेकर चला आ; क्योंकि सेवा के लिए वह मेरे बहुत काम का है'' (2 तीमुथियुस 4:11)। मरकुस इफिसुस में तीमुथियुस के पास या उसके निकट कुलुस्से में हो सकता है (1 तीमुथियुस 1:3)। किसी लिखित विवरण में यह नहीं मिलता है कि मरकुस कुलुस्से में गया था; परन्तु थोड़ी थोड़ी जानकारी इकट्ठी करने से हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि वह वहां था।

सभी संकेतों के अनुसार मरकुस प्रभु के लिए बड़ा काम करने वाला बन गया था। यह एक व्यक्ति के लिए जिसने डगमगाते हुए अपना मिशन कार्य आरम्भ किया था, एक सुखद अन्त था। बाहरी प्रमाण से सुझाव मिलता है कि वह सुसमाचार के उस विवरण का लेखक है जो उसके नाम पर है। परमेश्वर की प्रेरणा से लिखे पवित्र शास्त्र में मरकुस का नाम अन्तिम बार पतरस के पत्र में आता है जो इस बात का संकेत है कि वह पतरस के साथ, शायद रोम में था (1 पतरस 5:13)।

''और यीशु जो यूस्तुस कहलाता है'' (4:11)

अगला साथी जिसका नाम पौलुस ने शामिल किया वह था यीशु जो यूस्तुस कहलाता है। ''यीशु'' (*lēsous*) इब्रानी नाम ''यहोशू'' जिसका मूल अर्थ ''उद्धारकर्त्ता है'' या ''परमेश्वर उद्धार है'' है, का यूनानी रूप है। यहूदी समुदायों में यह नाम बहुत जो आम पाया जाता था (प्रेरितों 13:6), संसार के उद्धारकर्त्ता यीशु के नाम वाला ही है। दूसरी सदी में व्यावहारिक रूप में किसी का यह नाम नहीं था। पौलुस के साथ वाले व्यक्ति को यूस्तुस भी कहा जाता था, जो यहूदियों में सामान्य लातीनी नाम है, जिसका अर्थ ''धर्मी'' या ''सच्चा'' है।

''यूस्तुस कहलाता है'' से यह संकेत मिलता है कि इस व्यक्ति का नाम इब्रानी नाम ''यीशु'' के बजाय एक लातीनी नाम से अधिक प्रसिद्ध था। दोहरे नाम रखना जिसमें एक इब्रानी और दूसरा यूनानी हो, यहूदी संस्कृति में आम बात है। इसके उदाहरण ''शमौन जो पतरस कहलाता है'' (मत्ती 4:18), ''बरनबास अर्थात शांति का पुत्र'' (प्रेरितों 4:36) और ''यूहन्ना ... जो मरकुस कहलाता है'' (प्रेरितों 12:12) हैं।

''खतना किए हुए लोगों में से केवल ये ही परमेश्वर के राज्य के लिए मेरे सहकर्मी और मेरी शान्ति का कारण रहे हैं'' (4:11)

सहकर्मी (*sunergoi*) सामान्य अर्थ में मसीही लोगों के लिए नहीं, बल्कि सुसमाचार को फैलाने में अपने परिश्रम से दूसरों से अलग होने वालों के लिए लागू किया जाता था (देखें 3 यूहन्ना 8)। इसका इस्तेमाल परमेश्वर के साथ (1 कुरिन्थियों 3:9; 1 थिस्सलुनीकियों 3:2), ''मसीह में'' (रोमियों 16:3, 9), पौलुस के साथ (रोमियों 16:21; फिलिप्पियों 2:25; 4:3; फिलेमोन 24) और मसीही समुदाय के लिए (2 कुरिन्थियों 1:24; 8:23) मिलकर परिश्रम करने वालों के लिए भी इस्तेमाल किया जाता था।

पौलुस ने परमेश्वर के राज्य की बात वर्तमान वास्तविकता के रूप में (देखें 1:13; रोमियों 14:17; 2 थिस्सलुनीकियों 1:5)। दो साल तक रोम सहित इफिसुस के लोगों को समझाते और

अन्य स्थानों में प्रचार करते हुए वह इस राज्य की बातें सिखाता था। अन्य संदर्भों में ''परमेश्वर का राज्य'' इस जीवन के बाद आने की बात कही गई है।[3] पौलुस ने इन शब्दों को अपने तेरह में से छह पत्रों को शामिल किया (रोमियों 14:17; 1 कुरिन्थियों 6:9, 10; 15:50; गलातियों 5:21; इफिसियों 5:5; कुलुस्सियों 4:11; 2 थिस्सलुनीकियों 1:5)।

पौलुस ने यह स्पष्ट नहीं कहा कि पहले जिन तीन लोगों का उल्लेख किया था, वे यहूदी थे; बल्कि उसने कहा कि वे खतना किए हुए लोगों में से थे। जब तक संदर्भ उलट संकेत न दे तब तक ''यहूदी'' शब्द उन लोगों के लिए ही होता है जो व्यवस्था को मानते हैं और मसीहियत में परिवर्तित न हुए हों (प्रेरितों 9:22, 23; 13:43, 45)। दूसरी ओर यहूदी विश्वास वाला व्यक्ति जो मसीही बन गया हो धार्मिक रूप में अभी भी यहूदी ही रहेगा। पौलुस ने अपनी बात में अपने आपको शामिल किया कि यहूदी का बाहरी व्यक्ति के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है (प्रेरितों 10:28)। अक्विला जो मसीही था, को यहूदी कहा गया (प्रेरितों 18:2) और याकूब ने कुछ विश्वासियों को यहूदी बताया (प्रेरितों 21:20, 21)। मसीही बनने के बाद भी पौलुस ने अपने आपको यहूदी कहा (प्रेरितों 21:39; 22:3)।

पौलुस को अरिस्तर्खुस, मरकुस और यूस्तुस से शांति (*parēgoria*) मिली थी। नये नियम में यह शब्द केवल यहीं मिलता है। बाइबल से बाहर के साहित्य में इसके अर्थ में ''सांत्वना'' शामिल है। मसीह का इतना बड़ा सेवक होने के बावजूद पौलुस को दूसरों से प्रोत्साहन की आवश्यकता थी। उसके कुरिन्थुस में रहते समय उसे प्रोत्साहित करने के लिए मसीह ने उसे दर्शन दिया था (प्रेरितों 18:9, 10; देखें 2 कुरिन्थियों 1:3, 4)। वह कभी कहीं अकेला गया या ठहरा नहीं था, बल्कि उसने दूसरों को अपने साथ रखना चुना। अपनी दूसरी मिशनरी यात्रा पर अथेने में पहुंचकर उसने सीलास और तीमुथियुस को संदेश भेजा ''कि मेरे पास बहुत शीघ्र आओ'' (प्रेरितों 17:15)। वह थिस्सलुनीके के लोगों के लिए अपनी गहरी चिंता के कारण केवल अथेने में रहने को तैयार था (1 थिस्सलुनीकियों 3:1)। उसे साथ की आवश्यकता लगती थी, क्योंकि उसने लिखा, ''और जब मैं मसीह का सुसमाचार सुनाने को त्रोआस में आया, और प्रभु ने मेरे लिए एक द्वार खोल दिया तो मेरे मन में चैन न मिला, इसलिए कि मैं ने अपने भाई तीतुस को नहीं पाया; ...'' (2 कुरिन्थियों 2:12, 13)।

''इपफ्रास जो तुम में से है'' (4:12)

इपफ्रास, ''लूका,'' ''देमास'' (देखें आयत 14) अन्यजाति नाम हैं। अपने यहूदी साथियों की ओर से सलाम भेजने के बाद पौलुस इन नामों के द्वारा अपने अन्यजाति साथियों की ओर से सलाम लिखने लगा।

पौलुस ने इपफ्रास का नाम इस पत्र के परिचय में देकर साथी सेवक के रूप में उसके प्रति उसके लिए अपने अति सम्मान को दिखाया (1:7)। उसका पूरा नाम इपफ्रोदितुस था। यह फिलिप्पी का वह व्यक्ति नहीं था, जो फिलिप्पियों के नाम पत्र लिखने के समय पौलुस के साथ था (फिलिप्पियों 2:25; 4:18)।

इपफ्रास कुलुस्सियों का नज़दीकी हो सकता है। पौलुस ने तीमुथियुस के साथ या तीमुथियुस के स्थान पर इपफ्रास का नाम क्यों नहीं दिया? उसने पत्र लिखने में सहायता करने वाले के रूप

में परिचय में उसका नाम क्यों लिया? एक कैदी के रूप में उसे पौलुस से अलग किया गया हो सकता है और वह उसे कभी-कभार ही मिलता होगा। इसके अलावा यदि वह पौलुस के साथ कैद में था (फिलेमोन 23), तो वह सफर नहीं कर सकता था, जो यह दिखाता है कि उसने तुखिकुस और उनेसिमुस के साथ पत्र सौंपने के लिए पौलुस ने उसे क्यों नहीं भेजा।

तुम में से है, इस बात का संकेत देता है कि कुलुस्से इपफ्रास का गृह नगर था या वह अपने आपको उसके इलाके का या कुलुस्से की मण्डली में से मानता था। सम्बन्धियों, मित्रों या उस इलाके में विशेष दिलचस्पी के कारण उसने लौदीकिया और हियार पुलिस के साथ-साथ कुलुस्से में काम करने को चुना हो सकता है। इफिसुस में रहते हुए उसने इपफ्रास को सुसमाचार प्रचार के लिए कुलुस्से में भेजा होगा, क्योंकि वह वहां का रहने वाला था। स्वाभाविक रूप में अपने इलाके में उसकी विशेष दिलचस्पी होनी थी।

''मसीह यीशु का दास है, तुम से नमस्कार कहता है
और सदा तुम्हारे लिए प्रार्थनाओं में प्रयत्न करता है'' (4:12)

अपने पत्रों में पौलुस ने मसीह यीशु का दास शब्द का इस्तेमाल केवल इपफ्रास, तीमुथियुस और अपने लिए किया (रोमियों 1:1; गलातियों 1:10; फिलिप्पियों 1:1; तीतुस 1:1)। पौलुस ने इपफ्रास का इस प्रकार से आदर करके उसके प्रति अपने अति सम्मान को दिखाया। इपफ्रास को उसने ''सेवक'' भी बताया (1:7; 4:7), जिससे उसने उसे यीशु के सेवक के रूप में अपने साथ मिला लिया। ''सेवक'' और ''दास'' शब्द अपमानजनक लगते हैं, परन्तु पौलुस ने उनका इस्तेमाल इस अर्थ में नहीं किया। वह यीशु का सेवक और दास होने को सबसे ऊंचा सम्मान मानता था।

फिर पौलुस ने कहा कि इपफ्रास सदा तुम्हारे [उनके] लिए प्रार्थनाओं में प्रयत्न करता था। ''प्रयत्न करता'' (*agōnizomenos* जिससे अंग्रेज़ी शब्द ''agonize'' निकला है) का अर्थ निष्पकट प्रयास से आग्रह।[4] लूका ने गतसमनी बाग में यीशु की ''*agony*'' (क्लेश) को इस शब्द संज्ञा रूप में बताया (लूका 22:44), जैसे पौलुस ने कुलुस्सियों की ओर से अपने संघर्ष की बात बताते हुए किया (2:1)। लोगों से अपने लिए परमेश्वर से प्रार्थना करने में उसके साथ प्रयत्न करने के लिए कहते हुए उसने क्रिया रूप का इस्तेमाल किया (रोमियों 15:30)। यह वाक्यांश इपफ्रास की प्रार्थनाओं के जोश से होने की बात बताता है। वह केवल लगन से ही नहीं बल्कि लगातार (''सदा'') ही प्रार्थना करता था।

''ताकि तुम सिद्ध होकर पूर्ण विश्वास के साथ
परमेश्वर की इच्छा पर स्थिर रहो'' (4:1)

इपफ्रास ने प्रार्थना की कि उसके भाई स्थिर रहें। ''स्थिर'' (*stathēte*, *histēmi* से) का शारीरिक अर्थ ''खड़े'' होना है। इसका अर्थ दृढ़ रहना या एक विश्वास में बने रहना, डटे रहना और अटल होना है।[5] इपफ्रास ने प्रार्थना की कि कुलुस्से के लोग विश्वासयोग्य बने रहें और संसार की विधियों या रीतियों में भटक न जाएं।

कर्मवाच्य में होने के कारण, फिर इस बात का संकेत देता है कि इपफ्रास प्रार्थना करता था

कि इन मसीही लोगों को स्थिर रहने का कारण मिले। पौलुस ने यह नहीं बताया कि उन्हें स्थिर कैसे रखना था। कुछ लोगों का सुझाव है कि इपफ्रास उनकी स्थिरता केवल ईश्वरीय सहायता से आने की प्रार्थना कर रहा था। ईश्वरीय सहायता पवित्र आत्मा के द्वारा दी जाती है (इफिसियों 3:16), परन्तु यह बिना सहयोगात्मक मानवीय प्रयास के नहीं आती। इफिसुस के मसीही लोगों को स्थिर रहने की आज्ञा दी गई, जिसका अर्थ यह है कि उन्हें अपनी ओर से प्रयास करना था (इफिसियों 6:13, 14)।

''सिद्ध'' (*teleioi*) बेदाग होने से बढ़कर सम्पूर्णता और परिपक्वता को दिखाता है। NASB में यूनानी शब्द का अनुवाद ''सिद्ध'' बारह बार किया गया है, जिसमें से सात बार इसका बेहतर अनुवाद ''परिपक्व'' या ''पूर्ण विकसित'' है, क्योंकि वे बढ़ रहे मसीही गुणों के संदर्भ में मिलते हैं (मत्ती 5:48; फिलिप्पियों 3:15; 3:12; याकूब 1:4; 3:2; 1 यूहन्ना 4:18)। चार बार परमेश्वर के वचन या इच्छा में मिलने वाली और पूरी होने वाली सम्पूर्णता के सम्बन्ध में मिलता है (रोमियों 12:2; 1 कुरिन्थियों 13:10; याकूब 1:17, 25) और एक बार सम्पूर्ण स्वर्गीय प्रभु के सम्बन्ध में (इब्रानियों 9:11)। अन्य आयतों में NASB में *teleios* शब्द के रूपों का अनुवाद ''सिद्ध,'' ''सयाना'' (1 कुरिन्थियों 2:6; 14:20; इफिसियों 4:13; इब्रानियों 5:14) या ''सम्पूर्ण'' (मत्ती 19:21; कुलुस्सियों 1:28) के रूप में मिलता है।

कोई भी पाप रहित नहीं है (रोमियों 3:9, 10, 23)। केवल परमेश्वर ही सिद्ध है और पूर्ण पापरहित होने के अर्थ में बिना दोष के है (मत्ती 19:17)। ऊपर दी गई आयतें उन गुणों को दिखाती हैं, जो बढ़ते हुए पाप में मसीही लोगों में होने चाहिए। इस कारण *teleios* शब्द का अनुवाद ''सिद्ध'' नहीं बल्कि ''परिपक्व'' या ''बालिग'' होना चाहिए। कुलुस्से के समुदाय में परिपक्वता के लिए इपफ्रास की प्रार्थनाएं चाहे उपयोगी होनी थीं, परन्तु बेदाग सिद्धता के लिए प्रार्थनाएं किसी काम की नहीं होनी थीं। इस जीवन में त्रुटिहीन पाप रहित होने को कोई नहीं पा सकता (1 यूहन्ना 1:8, 10)। केवल यीशु ही बिना पाप किए रहा (2 कुरिन्थियों 5:21; इब्रानियों 4:15; 7:26)।

इसके अलावा इपफ्रास ने प्रार्थना की कि कुलुस्से के लोग परमेश्वर की सारी इच्छा में पूर्ण विश्वास (*plērophoreō*) रखें। भूतकाल में यह क्रिया निरन्तर परिणाम वाले पिछले कार्य को दिखाती है। यह जानते हुए कि वे संदेश की सच्चाई से कायल थे, इपफ्रास ने चाहा कि वे पूरी तरह से विश्वास करते रहें।

परमेश्वर की इच्छा कहने से पौलुस का अभिप्राय था कि जो परमेश्वर चाहता था उसमें से कुछ भी छोड़ा न जाए। यदि वे उसकी इच्छा में जोड़ देते या उसमें से कम कर देते तो उन्होंने उसकी ''सारी'' इच्छा को पूरा नहीं कर रहे होना था। यीशु ने प्रेरितों को बपतिस्मा लेकर चेले बनने वालों को उन सब बातों को सिखाने और मानने की आज्ञा दी, जो उसने उन्हें बताई थीं (मत्ती 28:19, 20)। कोई व्यक्ति परमेश्वर की ''सारी'' इच्छा को तभी पूरा कर सकता है, यदि वह उस में से जिसे परमेश्वर ने प्रकट किया है न तो कुछ जोड़े और न उसमें से घटाएं।

''मैं उसका गवाह हूं, कि वह तुम्हारे लिए और लौदीकिया और हियरापुलिस वालों के लिए बड़ा यत्न करता रहता है'' (4:13)

लौदीकिया और हियरापुलिस नामक दो नगर एक-दूसरे से लगभग छह मील (1 मील=1.6 कि.मी.) दूर थे इपफ्रास पौलुस का करीबी साथी पर आमक तौर पर उसके साथ इन भाइयों के लिए प्रार्थना करता था, जिस कारण पौलुस को मालूम था कि उसके मन पर इन नगरों का कितना बोझ है। वह इस इच्छा से कि वे यीशु में बने रहें और उसे समर्पित रहें, उनकी ओर से प्रार्थना करता रहता था।

''प्रिय वैद्य लूका और देमास का तुम्हें नमस्कार'' (4:14)

लूका लातीनी नाम ''लुसियस'' का उपनाम है। प्रिय वैद्य अभिव्यक्ति से यह पता चलता है कि पौलुस लूका से प्रेम करता था। ''प्रिय'' अन्य साथियों के लिए अपने लगाव को दिखाने के लिए चुना गया, उसका शब्द है [6] यह दूसरों द्वारा पौलुस को छोड़ देने के बाद उसके साथ लूका की वफ़ादारी से दिखाया गया आपसी लगाव था (2 तीमुथियुस 4:11)।

प्रेरितों 27:28 के अनुसार लूका रोम में पौलुस के साथ जहाज पर गया था, जहां वह उसके कैद में होने के समय उसके साथ रहा था। दूसरी सुसमाचार के दूसरे और तीसरे विवरणों, मरकुस और लूका के लेखकों को पौलुस के साथ उसके दूसरे कारावास के दौरान इकट्ठे देखना काफ़ी दिलचस्प है। क्या उन्होंने एक-दूसरे से पूछा? क्या उन्होंने सुसमाचार के अपने विवरण पहले ही लिख दिए थे? हमें नहीं मालूम।

जेल की अन्य दो पत्रियों में पौलुस ने लूका और प्रेरितों के काम की पुस्तकों के लेखक लूका को अपने साथियों में से एक बताया (2 तीमुथियुस 4:11; फिलेमोन 24)। इन पुस्तकों में चाहे लूका का नाम नहीं मिलता, परन्तु पौलुस के पत्रों को प्रेरितों के काम से मिलाने पर निष्कासन की प्रतिक्रिया से लेखक द्वारा ''हम'' और ''हमें'' लिखे जाने का अर्थ यही हो सकता है कि पौलुस के साथ केवल लूका और तीतुस थे [7] और प्रमाण कि लूका ने दोनों पुस्तकें लिखीं भाषा की शैली है, जो उसके अच्छा पढ़ा लिखा होना और डायोगनेटुस, इरेनियुस, क्लेमैंट ऑफ़ अलग्ज़ैंड्रिया, टरटुलियन, और यूसबियुस जैसे आरम्भिक लेखकों की गवाही देता है।

पौलुस ने लूका को ''प्रिय वैद्य'' (4:14) कहा और उसका नाम अपने ''सहकर्मियों'' में से एक के रूप में मरकुस, अरिस्तर्खुस और देमास के साथ दिया (फिलेमोन 24)। प्रेरितों के काम में अपने आपको वैद्य दिखाने के बजाय लूका ने संकेत दिया कि उसने सुसमाचार के प्रसार में पौलुस तथा अन्य लोगों के साथ परिश्रम किया था। लूका ने लिखा कि परमेश्वर ने ''[उन्हें] सुसमाचार सुनाने के लिए बुलाया'' था (प्रेरितों 16:10)।

प्रेरितों के काम में ''हम'' वाली आयतों से पता चलता है कि लूका ने पौलुस के साथ त्रोआस में पौलुस के साथ सम्बन्ध पौलुस की दूसरी मिशनरी यात्रा पर आरम्भ किया। बहुत सम्भावना है कि त्रोआस में पौलुस से मिलने के समय वह मसीही था, क्योंकि उसने सुसमाचार सुनाने के लिए मकिदुनिया जाने की बुलाहट में अपने आपको शामिल किया (प्रेरितों 16:10)। कुछ लोगों का मानना है कि पौलुस ने उससे सम्पर्क किया कि उसे चिकित्सकीय देखभाल की आवश्यकता थी। उसके साथ अपनी संगति के पौलुस द्वारा उसे मसीह तक लाने के बाद वह

उसके निजी वैद्य के रूप में उसकी डॉक्ट्रिन की आवश्यकताओं का ध्यान रखने के लिए पौलुस के साथ जाता रहा। यह एक अनुमान है और इसे निश्चित्ता नहीं माना जा सकता।

पौलुस और उसके अन्य साथियों के साथ लूका त्रोआस सें फिलिप्पी में गया था। वहां बाजार में उसे एक दासी मिली, जो उसके (और पौलुस, सीलास और तीमुथियुस) के पीछे पीछे चलते हुए कहने लगी, ''ये मनुष्य परम प्रधान परमेश्वर के दास हैं, जो हमें उद्धार के मार्ग की कथा सुनाते हैं'' (प्रेरितों 16:17)। उसके उत्तर का अर्थ यह है कि वह और दूसरे लोग यीशु के नाम में उद्धार की शिक्षा दे रहे थे। जब पौलुस, सीलास और तीमुथियुस चले गए तो पौलुस की अपनी तीसरी मिशनरी यात्रा से लौटने तक लूका फिलिप्पी में रहा (प्रेरितों 16:10–17; 20:5–15)। वहां से वह पौलुस के साथ आगे यरूशलेम में गया (प्रेरितों 21:1–18) और फिर रोम में गया, जहां वह पौलुस के साथ दो और साल रहा (प्रेरितों 27:1—28:16)।

कुछ लोगों ने अनुमान लगाया है कि तीतुस लूका का भाई था। इस तथ्य के आधार पर कि लूका ने उसे पौलुस के साथी के रूप में शामिल नहीं किया। पौलुस के पत्रों से स्पष्ट है कि तीतुस पौलुस के साथ उसकी तीसरी मिशनरी यात्रा के समय था (देखें 2 कुरिन्थियों 2:13; 7:6; गलातियों 2:1–3)। यदि ऐसा है तो इसे लूका की शालीनता कहा जा सकता है कि उसने प्रेरितों के काम में न तो अपने भाई तीतुस का नाम दिया और न ही अपना।

अन्यजातियों के साथ उसका होना, शायद यह संकेत भी दे सकता है कि लूका एक अन्यजाति था। ओरिगन ने उसे अज्ञात लुसियस के साथ मिलाया, जिसे पौलुस ने रोमियों 16:21 में अपना भाई कहा। यूसबियुस और जेरोम ने निष्कर्ष निकाला है कि इस व्यक्ति का जन्म पीरिया के अन्ताकिया में हुआ था।[8] यदि ऐसा है तो वह प्रेरितों 13:1 वाला लूकियुस कुरेनी हो सकता है, जैसा कइयों का कहना है। वैद्य और इन दो लोगों के बीच कोई पक्की कड़ी नहीं है। एक और विचार यह है कि वह थियोपुलिस के घराने में सेवा करता था, जो सम्भवतया एक धनवान सरकारी अधिकारी था, जिसके नाम उसने लूका और प्रेरितों के काम की पुस्तकें लिखीं (लूका 1:3; प्रेरितों 1:1)। परम्परा के अनुसार पौलुस की मृत्यु के अनुसार लूका दलमतिय्याह, गयूल, इटली और मकिदुनिया का प्रचार था और उसकी मृत्यु पहली शताब्दी के अन्त के निकट अखाया या बेतोनिया में हुई।[9]

देमास का नाम कुलुस्सियों और फिलेमोन में लूका के साथ मिलता है। इन सहकर्मियों के विषय में पौलुस द्वारा लिखे जाने के समय लूका पौलुस के साथ था, जो जेल में था, जबकि देहमास थिस्सलुनीके को चला गया था (2 तीमुथियुस 4:10, 11)। ''देमास'' ''दिमेत्रियुस'' का छोटा रूप है जिस कारण कुछ लोग इसे 3 यूहन्ना 12 वाले दिमेत्रियुस से मिला देते हैं। बिना सराहना के पौलुस द्वारा उसकी सराहना किए बिना कि उसने दूसरों को दिया, का उल्लेख यह अर्थ दे सकता है कि कुलुस्से के लोग उससे परिचित थे। दूसरी ओर पौलुस इसलिए कुछ नहीं बोला होगा, क्योंकि उसे सराहना करने वाली उसमें कोई बात नहीं मिली है। 2 तीमुथियुस में पौलुस ने उसकी बात छोड़ जाने वाले के रूप में की, जो इस वर्तमान संसार से प्रेम रखने के कारण थिस्सलुनीके को चला गया था (4:10)। पौलुस ने शायद उस में उस अस्थिरता को समझ लिया था, जो बाद में सच हो जानी थी।

भाइयों को सलाम और टिप्पणियां (4:15-17)

[15]लौदीकिया के भाइयों को और नुमफास और उन के घर की कलीसिया को नमस्कार कहना। [16]जब यह पत्र तुम्हारे यहां पढ़ लिया जाए, तो ऐसा करना कि लौदीकिया की कलीसिया में भी पढ़ा जाए, और वह पत्र जो लौदीकिया से आए उसे तुम भी पढ़ना। [17]फिर अर्खिप्पुस से कहना कि जो सेवा प्रभु में तुझे सौंपी गई है, उसे सावधानी के साथ पूरी करना।

''लौदीकिया के भाइयों को नमस्कार कहना'' (4:15)

लौदीकिया को सलाम कहना और उनके साथ पौलुस का पत्र साझा करना कुलुस्सियों के लिए कोई परेशानी वाला नहीं था, क्योंकि उसके दोनों नगर एक-दूसरे से लगभग दस मील दूर थे। पौलुस को चाहे लौदीकिया के कई लोगों का पता न हो परन्तु उसे मण्डली के कुछ लोगों का पता था। वह नुमफास को नाम से जानता था। पौलुस के लगभग तीन साल तक इफिसुस में रहने के समय लौदीकिया के कुछ लोग उसे मिलने गए (प्रेरितों 20:31)।

भाइयों (*adelphoi*) चाहे एक पुरुषवाचक शब्द है, पर इसमें पुरुष और स्त्रियां दोनों शामिल हो सकती थीं। पौलुस ने स्त्रीलिंग शब्द *adelphai* जोड़ते हुए ''भाइयों और बहनों'' लिखा हो सकता है। यहां पर *adelphoi* ही मिलता है, इस कारण स्त्रियों ने पक्का मान लिया होगा कि पौलुस के ''भाइयों'' कहने का अर्थ सामान्य अर्थ में था और इसमें वे भी शामिल थे।

नये नियम में यह केवल एक घटना है, जिसमें एक मण्डली को किसी दूसरी मण्डली को नमस्कार या सलाम कहने का निर्देश दिया गया हो। पौलुस ने यह निर्देश नहीं दिया कि उन्हें कैसे यह सलाम देना है, चाहे पत्र के द्वारा हो या किसी दूत को भेजकर व्यक्तिगत रूप में, निजी तौर पर या किसी सार्वजनिक सभा के दौरान। न ही उसने यह कहा कि यह सलाम किसने देना था यानी पत्र के पढ़ने वाले ने या मण्डली के अगुवे ने या किसी और व्यक्ति ने। पौलुस कुलुस्से के लोगों से लौदीकिया के लोगों को सलाम कहने को कह रहा था, आवश्यक नहीं कि वे उस पत्र को पढ़ें, जिसमें उसने कुलुस्सियों को लिखा था। पौलुस का लौदीकिया के भाइयों को कुलुस्से के भाइयों का सलाम कहना सुझाव देता है कि इन दोनों मण्डलियों के बीच और शायद विश्वासियों की अन्य मण्डलियों के बीच सम्बन्ध पाया जाता था। ये दोनों मण्डलियां निश्चय ही इतना निकट थीं कि वे एक-दूसरे से संगति रख सकती थीं।

''और नुमफास और उन के घर की कलीसिया को'' (4:15)

कलीसिया (*ekklēsia*) की चाहे कई परिभाषाएं हो सकती हैं, परन्तु यहां पर इसका अर्थ स्थानीय मण्डली है न कि मसीह की पूरी देह।

मण्डलियां आमतौर पर घरों में इकट्ठा होती थीं (प्रेरितों 12:12), विशेषकर धनी सदस्यों के घरों में, जिनके यहां इकट्ठा होने के लिए काफी बड़े कमरे होते थे। पहली दो सदियों तक मसीही लोगों के इकट्ठा होने का स्थान आम तौर पर यही होता था। पौलुस ने अन्य मसीही लोगों के घरों में कलीसियाओं के एकत्र होने की बात की (रोमियों 16:5, 23; 1 कुरिन्थियों 16:19;

फिलेमोन 2)।

नुमफास के नाम का लिंग पवित्र शास्त्र में इसके कर्मकारक रूप से तय नहीं किया जा सकता। यहां पर सर्वनाम से तय होता है कि कौन सा लिंग था। बेहतरीन हस्तलिपियों में उनके घर के लिए चाहे पुरुष का घर के बजाय स्त्री का घर है, परन्तु अनुवादों में भिन्नता पाई जाती है। NIV; TNIV, 1977 NASB, और NASB में स्त्री के लिए ''her'' है परन्तु NASB में यह टिप्पणी है: ''या नुमफास (पुलिंग)।'' KJV और NKJV में पुरुष का संकेत देते हुए इसका अनुवाद ''his'' हुआ है।ASV में ''उनके'' है। कुछ टीकाकारों ने सुझाव दिया है कि ''पुरुष का घर'' में परिवर्तन आज की पीढ़ियों द्वारा स्त्री के घर की स्वामिनी होने पर प्रश्न के कारण किया गया; परन्तु यह शायद मान्य व्याख्या नहीं है। यूहन्ना मरकुस की माता मरियम का यरूशलेम में घर था (प्रेरितों 12:12) और लुदिया ने ज़िद की थी कि पौलुस और उसके साथियों ने ज़िद की थी, ''चलकर मेरे घर में रहो'' (प्रेरितों 16:15) जो इस बात का संकेत देता है कि स्त्रियों के अपने घर होते थे। यह सुझाव दिया गया है कि नुमफास पुरुषवाचक नाम नुमफोदोरुस का संक्षिप्त रूप है और घर किसी पुरुष का था। परन्तु हस्तलिपि के प्रमाण का बंद सही पदनाम होने के रूप में ''स्त्री का घर'' की ओर संकेत करता है।

पौलुस नुमफास को व्यक्तिग रूप में जानता होगा। कम से कम यह तथ्य कि नुमफास का नाम दिया गया, इस बात का अर्थ यह है कि वह या तो उससे मिला था या किसी ने उसके बारे में उसे बताया था, शायद इपफ्रास ने। पौलुस का किसी स्त्री का नाम लेना कोई नई बात नहीं है क्योंकि अन्य पत्रों में उसने स्त्रियों के नाम लिए हैं (देखें रोमियों 16:3, 6; 1 कुरिन्थियों 16:19; फिलिप्पियों 4:2, 3)।

उस नगर का जहां नुमफास रहती थी, पक्का पता नहीं चल सकता। उसका उल्लेख लौदीकिया की कलीसिया के नाम पौलुस के सलाम के तुरन्त बाद था, इस कारण कुछ लोगों ने यह मान लिया कि यह वही मण्डली थी, जहां की वह सदस्य थी। पत्र को प्राप्त करने वालों को पता होगा कि वह कहां रहती थी।

''जब यह पत्र तुम्हारे यहां पढ़ लिया जाए, तो ऐसा करना कि लौदीकिया की कलीसिया में भी पढ़ा जाए'' (4:16)

पढ़ (*anaginōskō*) पढ़ने के लिए सामान्य शब्द से लिया गया है। *Anagnōsis* शब्द जिसका अर्थ सार्वजनिक रूप में पढ़ना है, नये नियम में केवल तीन बार मिलता है (प्रेरितों 13:15; 2 कुरिन्थियों 3:14; 1 तीमुथियुस 4:13)। पौलुस के पत्र कलीसियाओं में वितरित करने के लिए लिखे गए थे और आज भी उनका अध्ययन किया जाना और उनका आदर किया जाना आवश्यक है। उसका तुम्हारे यहां कहना इस बात को दिखाता है कि उसे उम्मीद थी कि मण्डली के सब सदस्यों को उसके पत्रों को पढ़े जाने को सुनने का अवसर दिया जाए (देखें 1 थिस्सलुनीकियों 5:27)।

पौलुस के मन में केवल कुलुस्से की कलीसिया से बढ़कर श्रोता थे, क्योंकि उसने आग्रह किया कि उसका पत्र लौदीकिया में पढ़ा जाए। उसने यह भी चाहा कि लौदीकिया से आने वाला पत्र कुलुस्सियों में पढ़ा जाए, जो इस बात का संकेत है कि दोनों मण्डलियों में एक जैसी समस्याएं

थीं। उसने यह स्पष्ट नहीं किया कि उसके पत्र को मण्डली की सभा में कौन पढ़े। स्पष्टतया यह कुलुस्से की कलीसिया के निर्णय पर छोड़ दिया गया था कि कौन पढ़े और कैसे पढ़े। इस तथ्य का अच्छा उदाहरण है कि पवित्र शास्त्र की किसी बात का क्या किया जाए; परन्तु कैसे, कब और कहां किया जाए, इसका निर्णय निर्देश बनाने वालों पर छोड़ दिया जाता था।

एक कल्पना की जा सकती है कि पत्र को मण्डली की आम सभाओं में से किसी एक के द्वारा पढ़ा जाना था, जो कि सप्ताह के पहले दिन पढ़ना था। यह इकट्ठा होने का उसका विशेष दिन था (प्रेरितों 20:7; 1 कुरिन्थियों 16:2), जिसे प्रभु का दिन (*hē kuriakē hēmera*; प्रकाशितवाक्य 1:10) कहा गया है। आरम्भिक कलीसिया द्वारा इस वाक्यांश का इस्तेमाल रविवार की उनकी सभाओं के लिए किया जाता था।

''और वह पत्र जो लौदीकिया से आए उसे तुम भी पढ़ना'' (4:16)

पत्र जो लौदीकिया से आए का हवाला ऐसे सवाल खड़े करता है, जिनका उत्तर आसान नहीं है। कुछ सम्भावनाएं इस प्रकार से सुझाई गई हैं:

(1) कुछ लोगों का मानना है कि यह लौदीकिया के नाम पौलुस द्वारा लिखित खोए हुए पत्र की बात है। उससे मॉरमन लोगों का तर्क होता है कि कई स्पष्ट और बहुमूल्य बातें बाइबल से गायब हैं। लौदीकिया का पत्र लगने वाला एक असम्भावनीय पत्र चौथी शताब्दी के आस-पास मिला:

> जेरोम[10] कुछ यूनानी पूर्वज लौदीकिया की नकली पत्री के तिरस्कारपूर्ण होने की बात करते हैं और नीकिया की दूसरी सभा (ईस्वी 787) इसे नकारती है। परन्तु छठी शताब्दी के आरम्भ से कई कोडेक्स फुलडेनसिस वाली लातीनी [हस्तलिपियां] और मध्य युग तक रहने वाली हस्तलिपियों में लौदीकिया के नाम एक पत्री है: पौलुस के वाक्यांशों का अस्पष्ट और बेडौल संग्रह की डाकाजनी मुख्यतया फिलिप्पियों से की गई, जिसका कुलुस्सियों 4:16 को निकालने की जगह भरने के बजाय कोई उद्देश्य नहीं है। इस पर यूनानी से अनुदित होने का चिह्न है; अरबी संस्करण का होना भी इसका सुझाव देता है। इसे चौथी शताब्दी के बाद का नहीं माना जा सकता। परन्तु इसके म्यूरेटोरियन कैनन में दूसरी शताब्दी की पत्री के आक्रमण की सम्भावना नहीं है।[11]

(2) एक और विचार यह है कि यह पौलुस द्वारा किसी अज्ञात मण्डली को लिखा गया पत्र था, परन्तु बहुत कम लोग इस विचार को मानते हैं। फिर, यदि ऐसा कोई पत्र था तो वह खो चुका है।

(3) यह समझाने के लिए पौलुस ने कुलुस्सियों की पत्री में लौदीकिया के लोगों को सलाम क्यों भेजा, यह सुझाव दिया गया है कि लौदीकिया के नाम पत्र इपफ्रास ने लिखा था। यदि पौलुस ने इसे नहीं लिखा था तो इपफ्रास का शायद उन्हें सलाम भेजने का यह पहला अवसर नहीं था। यह व्याख्या इस विवरण को ध्यान में रखते हुए प्रतीत होती है कि पौलुस ने लौदीकिया के नाम पत्र को ''मेरा पत्र'' कहा (4:16)।

(4) क्रिसोस्टोम, मौप्सुएस्टिस, थियोडोर, और थियोडोरेट का मानना था कि यह लौदीकिया

के लोगों द्वारा पतरस को लिखा गया पत्र था। यह विश्वसनीय नहीं है: पौलुस को किसी पत्र का कैसे पता था, यदि वह उसके पास पहुंचा ही नहीं था?

उसे लिखा पत्र कुलुस्से के भाइयों में क्यों पढ़ा जाना चाहिए था? लौदीकिया की मण्डली की ओर से लिखा गया पत्र पौलुस द्वारा लिखे गए पत्र में पौलुस के लिखे पत्र जितना अधिकार नहीं होना था। उसके कुलुस्सियों का पत्र लौदीकिया की कलीसिया में पढ़ा जाने की उम्मीद इस बात का संकेत देती है कि वह इसे अपनी प्रेरिताई के अधिकार के रूप में देखता था।

(5) कुछ विद्वानों का मानना है कि ये पत्र इफिसियों, फिलेमोन या इब्रानियों के पत्र की एक प्रति थे जो लौदीकिया के लोगों को मिले थे। फिलेमोन के नाम पत्र खारिज हो जाता है क्योंकि इसमें केवल व्यक्तिगत मामलों की बात थी जिनका कुलुस्सियों के लिए कोई महत्व नहीं था। कुछ विद्वानों का महत्व है कि यह इब्रानियों का पत्र है क्योंकि उन्हें संदेह है कि पौलुस ने ही इसे लिखा और प्रश्न करते हैं कि कुलुस्से में व्यवस्था के ऊपर यीशु की श्रेष्ठता की चर्चा के लायक यहूदी लोगों की संख्या थी भी या नहीं। यह पत्र वही हो सकता है, जिसे उसने इफिसियों के नाम लिखा था। मार्सियन[12] इफिसियों को बेनाम मानता था, उसका मानना था कि यह पौलुस का था और उसने अपने कैनन में ''लौदीकिया के लोगों के नाम'' नाम दिया; परन्तु इस अविवादित विधर्म के काम को न मानने की कुछ विश्वसनीयता है।

अन्य लोग यह तर्क देते हैं कि यह इफिसियों के नाम पत्र नहीं है क्योंकि उनका निर्णय है कि इफिसियों के नाम पत्र कुलुस्सियों के नाम पत्र के बाद लिखा गया था। इफिसियों के नाम पत्र पहले लिखा गया हो सकता है, परन्तु पहुंचाने वाले न होने के कारण तुरन्त सौंपा नहीं गया होगा। अन्य लोग इफिसियों के पत्र को एशिया माइनर की सब कलीसियों के नाम लिखे जोड़ी पत्र के रूप में में देखते हैं, क्योंकि यह ''विश्वासी लोगों के नाम जो इफिसुस में है'' (इफिसियों 1:1) लिखा गया था न कि किसी विशेष मण्डली के नाम या कुछ हस्तलिपियों में ***eh Ephesō*** (''इफिसुस में'') नहीं है। इसके अलावा इफिसियों में पौलुस ने व्यक्तिगत संदेश और अपने साथियों की ओर से सलाम और उनके सम्बन्ध में हितकारी टिप्पणियां भेजने के अपने सर्वमान्य नमूने को नहीं माना। यह असामान्य लगता है कि उसने किसी को सलाम नहीं भेजा या इफिसुस में तीन वर्ष तक रहने के दौरान जिन लोगों को जानता था उन्हें कोई निर्देश नहीं दिया (प्रेरितों 20:31)। हो सकता है कि उसने विशेष लोगों का नाम इसलिए नहीं लिया क्योंकि उसका इदारा एशिया के बहुत बड़े श्रोताओं के नाम संदेश देना था जिन तक वह इफिसुस में अपने काम के द्वारा पहुंचा था।

हर्बरट एम. कारसर ने इफिसियों के नाम पत्र को ''लौदीकिया की ओर से'' पत्र:

> सामान्यतया यह मान लिया जाता है कि यह एक कलीसिया के नाम नहीं, बल्कि बड़े पैमाने पर वितरण के लिए पत्र था। ... पत्र स्थानीय परिस्थितियों की नहीं बल्कि उन सच्चाइयों को प्रभावित करता है, जो बड़े पैमाने पर कलीसिया को प्रभावित करती है। इस पत्र को पहुंचाने वाला व्यक्ति तुर्खिकुस है (इफिसियों 6:21); जिसने कुलुस्से के नाम पत्र भी पहुंचाया था; और दोनों पत्रों के बीच सम्बन्ध के साथ यह पत्र इस विचार की भी पुष्टि करता है कि दोनों एक ही समय में तैयार किए गए थे और एक ही इलाके में गए

थे। यदि ''इफिसियों'' की पत्री एशिया माइनर की कलीसियाओं में भेजी गई थी तो बहुत सम्भावना है कि यह कुलुस्से में भेजे जाने से पहले लौदीकिया के बड़े केन्द्र में गई हो।[13]

हमें बहुत ज्यादा चिंता करने की आवश्यकता नहीं है कि लौदीकिया के नाम पत्र का क्या बना। यीशु ने प्रतिज्ञा की थी कि उसका वचन कभी नहीं टलेगा (मत्ती 24:35)। हमारे वर्तमान कैनन में जो कुछ भी आवश्यक था, परमेश्वर ने उसे सम्भाल लिया। महत्वपूर्ण बात यह है कि पौलुस के पत्र कलीसियाओं के बीच वितरित किए गए थे। उसने इस उम्मीद से कि उसके लेखों को प्रभु की आज्ञाओं वाले लेखों के रूप में स्वीकार किया जाएगा, अधिकार के साथ लिखा (1 कुरिन्थियों 14:37)। और गवाही की आरम्भिक कलीसियाओं के पास पौलुस के पत्रों की प्रतियां थीं और उन्हें पवित्र शास्त्र के रूप में माना जाता था। पतरस के पौलुस के लेखों को पवित्र शास्त्र की अन्य बातों से मिलाने में मिलती है (2 पतरस 3:15, 16)।

''अर्खिप्पुस से कहना'' (4:17)

फिर पौलुस ने अर्खिप्पुस के बारे में लिखा। इस नाम का अर्थ है ''घोड़े का स्वामी'' बहुत सम्भावना है कि अर्खिप्पुस फिलेमोन 2 वाला पौलुस का ''साथी योद्धा'' था जो अफफिया और फिलेमोन से जुड़ा था। उसके बारे में और कुछ नहीं बताया गया। कइयों का मानना है कि वह उनेसिमुस के स्वामी और कुलुस्से की मण्डली के एक अगुवे, फिलेमोन का पुत्र या भाई था। वह प्रतिज्ञा की कलीसिया का सदस्य भी हो सकता है, परन्तु सम्भवतया वह कुलुस्से की कलीसिया का सदस्य था।

अर्खिप्पुस और उसके काम के लिए पौलुस के सम्मान को ''हमारे साथी योद्धा'' वाक्यांश में दिखाया गया है (फिलेमोन 2)। कुछ लोग उसे लौदीकिया की नीमगर्म कलीसिया के ''स्वर्गदूत'' ''दूत'' के रूप में पहचानते हैं (प्रकाशितवाक्य 3:14)। अनुवादित शब्द ''दूत'' (*angelos*) का अर्थ सांसारिक दूत भी हो सकता है (मत्ती 11:10; मरकुस 1:2; लूका 7:21, 27; याकूब 2:25)। इस कारण वास्तव में वह लौदीकिया की कलीसिया का *angelos* हो सकता है। परम्परा से सुझाव मिलता है कि फिलेमोन और अपफिया के साथ उसे कनोय में पथराव करके मार डाला गया था।[14]

''जो सेवा प्रभु में तुझे सौंपी गई है, उसे सावधानी के साथ पूरी करना'' (4:17)

सावधानी के साथ (*blepe*) चेतावनी हो सकता है, जैसे कुलुस्सियों 2:8 में (देखें गलातियों 5:15; इफिसियों 5:15; फिलिप्पियों 3:2)। पौलुस ने अर्खिप्पुस की सेवा (*diakonia*) का कोई विवरण नहीं दिया, न ही उसने यह कहा कि उसे यह ताड़ना किस ने देनी थी। शायद उसे पूरी मण्डली से उसके प्रभु के काम में प्रोत्साहित करने की उम्मीद थी। पौलुस ने यह मान लिया कि कलीसिया को मालूम है कि अर्खिपुस की सेवकाई कहां तक है।

पौलुस ने अर्खिपुस की सेवा के प्रति चिंता जताई चाहे उसने बताया नहीं था कि उसकी सेवा कैसी थी। एडुअर्ड लोसे ने लिखा है ''''सेवा' (*diakonia*) की अवधारणा सेवा किए जाने को दिखाती है न कि डीकन के पद के इस्तेमाल को।''[15] (प्रेरितों 6:3; 1 तीमुथियुस

3:8-13)। इसका उन सात लोगों के सम्बन्ध में अर्थ है, जिन्हें नज़रअन्दाज़ हुई विधवाओं की आवश्याकताओं को पूरा करने की "सेवा" (*diakoneō*) के लिए चुना गया था (प्रेरितों 6:2, 3)। उन्हें डीकन बनने के लिए नहीं चुना गया था, क्योंकि उनकी एकमात्र योग्यताएं उनके लिए "पवित्र आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण" होने की थी (प्रेरितों 6:3; 1 तीमुथियुस 3:8-13 से तुलना करें)।

अविश्वासियों तक पहुंचने के प्रयास या सदस्यों को सिखाने की सेवकाई में अर्खिपुस की सेवकाई सुसमाचार प्रचार हो सकती है। पौलुस ने उसे कलीसिया को सिद्ध करने और संगठित करने की वही सेवकाई जो उसने तीतुस को दी थी (तीतुस 1:5) या उन सात को दिए गए काम जैसा परोपकार का काम दिया हो सकता है। अर्खिप्पुस इन में से किसी या सभी सेवकाइयों में व्यस्त रहा हो सकता है।

अर्खिपुस की तरह मसीह की देह के हर अंग के लिए प्रभु की सेवा के अपने क्षेत्र में वफ़ादारी से और सावधानी से सेवा करने के लिए "सावधानी" बरतनी आवश्यक है। पौलुस ने दासों को पहले समझाया था कि "जो कुछ तुम करते हो, तन-मन से करो, यह समझ कर कि मनुष्यों के लिए नहीं परन्तु प्रभु के लिए करते हो" (कुलुस्सियों 3:23)। कलीसिया के सदस्यों को एक-दूसरे को उस काम को पूरा करने में लगन से करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए, जो वे प्रभु के लिए कर सकते हैं।

अन्तिम टिप्पणियां (4:18)

[18]मुझ पौलुस का अपने हाथ से लिखा हुआ नमस्कार। मेरी जंजीरों को स्मरण रखना; तुम पर अनुग्रह होता रहे। आमीन।

"मुझ पौलुस का अपने हाथ से लिखा हुआ नमस्कार" (4:18)

क्या पौलुस ने कुलुस्सियों के नाम पूरा पत्र लिखा या इसे लिखवाया? कई टीकाकारों का मानना है कि उसने पत्र को लिखवाया और बाद में सलाम लिखकर इस पर अपने हाथ से हस्ताक्षर कर दिए, जो किसी भी बनावटीपन से बचाव के लिए उसकी प्रेरिताई के अधिकार की मोहर थी। पत्र को लिखवाने के बाद अन्तिम टिप्पणी देते हुए अपने हस्ताक्षर कर देना यूनानी और रोमी जगत में आम रीति थी। पौलुस के अपने हस्ताक्षर और सलाम अन्य पत्रों में थे (1 कुरिन्थियों 16:21; गलातियों 6:11; 2 थिस्सलुनीकियों 3:17; फिलेमोन 19)। एकमात्र पत्र जिसमें लिखने वाले ने कहा कि वह पौलुस के लिए पत्र लिख रहा था वह रोमियों के नाम तिरतियुस का लिखा पत्र था (रोमियों 16:22)।

"मेरी जंजीरों को स्मरण रखना" (4:18)

पौलुस की ओर से प्रार्थना के लिए विनती संक्षिप्त थी और उसी के लिए थी। इसमें उसकी स्थिति के लिए पौलुस की चिंता के बारे में बहुत कुछ कहती थी, परन्तु वह लोगों पर अपनी व्यक्तिगत स्थिति का बोझ नहीं डालना चाहता था। स्मरण (*mnēmoneuō*) शब्द यरूशलेम

के अगुओं की शिक्षा में भी था कि ''कंगालों की सुधि लें'' (गलातियों 2:10)। कुलुस्से के लोग ये काम अपनी प्रार्थनाओं के द्वारा और यदि वे कर सकते तो आर्थिक सहायता भेजकर भी कर सकते थे। फिलिप्पी के भाइयों ने पौलुस को इसी प्रकार से स्मरण रखा था (फिलिप्पियों 4:15, 16)। कुछ टीकाकारों का निष्कर्ष कि पौलुस उसकी प्रेरिताई के अधिकार को समझने को कह रहा था, खारिज किया जा सकता है। अपने कारावास के सम्बन्ध में, न कि अपनी प्रेरिताई के सम्बन्ध में उसकी विनती पर उसने पहले ही पुष्टि की थी (1:1)।

''तुम पर अनुग्रह होता रहे'' (4:18)

अपने पत्रों का आनन्द और समापन परमेश्वर या यीशु के अपने पाठकों के आरम्भ और अन्त में अनुग्रह होने की शुभ इच्छा करना पौलुस की आदत थी।[16] उसने इस पत्र का समापन अपने प्रेम की महानता और अपने साथियों की चिंता और परमेश्वर की भलाई पर अपने भरोसे को दिखाते हुए किया। इस प्रकार से उसने अपने पाठकों में अपनी दिलचस्पी दिखाई। अपने पाठकों के लिए परमेश्वर की आशिषें और समर्थन की आशा की उसकी अभिव्यक्ति इस पत्र को समाप्त करने का उपयुक्त ढंग था।

प्रासंगिकता

मसीह के लिए इकट्ठे काम करना (4:10-14)

पौलुस के साथ दो जन थे, जिन्होंने अपनी पिछली गलतियां सुधार ली थीं। उनेसिमुस जो दास था, अपने स्वामी को छोड़ गया था। पौलुस ने उससे मिलकर उसे मसीह में लाया था। उसे दास के स्वामी फिलेमोन से सुसमाचार को फैलाने में उसकी सहायता करने की अनुमति मिल गई हो सकती है। मरकुस ने जो पहली मिशनरी यात्रा के दौरान पौलुस और बरनबास के साथ मिला था, उन्हें पिरगा में छोड़कर घर लौट गया था (प्रेरितों 13:13)। बाद में पौलुस ने दूसरी मिशनरी यात्रा पर उसे साथ लेने से इनकार कर दिया (प्रेरितों 15:38), परन्तु वह पौलुस का भरोसा जीतकर फिर से उसके लिए प्रोत्साहन का कारण बन गया होगा।

लोग अपने अतीत से निकल सकते हैं। पतरस जिसने प्रभु का इनकार किया था एक विलक्षण प्रेरित बन गया। मरियम मगदलीनी जो एक विश्वासयोग्य चेली थी, चाहे उसमें पहले सात दुष्टात्माएं थीं (लूका 8:2)। पौलुस ने कुरिन्थुस के मसीही लोगों को याद दिलाया कि उन में से कुछ लोगों का जीवन अनैतिकता से भरा था (1 कुरिन्थियों 6:9-11)।

यीशु महसूल लेने वालों और पापियों का यार था (मत्ती 9:10, 11; 11:19)। यीशु को इस बात की उतनी चिंता नहीं थी जिस बात की कि उसके लिए क्या बन सकते थे। उसने व्यभिचार में पकड़ी गई स्त्री से जब उस पर आरोप लगाने वाले चले गए कहा, ''मैं भी तुझ पर दण्ड की आज्ञा नहीं देता; जा, और फिर पाप न करना'' (यूहन्ना 8:11)।

यीशु लोगों के जीवनों को बदलकर उन्हें अपने वफ़ादार सेवक बना सकता है। हमें मसीही बन जाने वालों के विरुद्ध उनके पुराने पापों को कुरेदना नहीं चाहिए। प्रभु की सहायता से वे उसके काम में बड़े उपयोगी हो सकते हैं। हमें यह नहीं देखना चाहिए कि लोग पहले क्या थे

बल्कि यह देखना चाहिए कि वे क्या बन सकते हैं।

अलग-अलग पृष्ठभूमियों वाले लोग एक होकर काम कर सकते हैं। उनके यीशु के अनुयायी बनने का यही परिणाम हुआ। यही बात मसीह के सब अनुयायियों के लिए होनी चाहिए। हम सब को एक ही देह में बपतिस्मा दिया गया है (1 कुरिन्थियों 12:13)। मसीह में बपतिस्मा लेकर अब हमें यहूदी या यूनानी न कहा जाए, क्योंकि हम "मसीह यीशु में एक" हैं (गलातियों 3:27, 28)।

जाति या धर्म चाहे कोई भी क्यों न हो, हमें यीशु के लिए एक होकर काम करना आवश्यक है। उसने व्यवस्था को खत्म करके यहूदियों और अन्यजातियों के बीच की दीवार को गिरा दिया। ऐसा उसने इसलिए किया, ताकि वह हम सब को क्रूस के द्वारा एक देह में परमेश्वर के साथ मिला सके (इफिसियों 2:14-16)।

हमारा फोकस परमेश्वर का राज्य होना चाहिए। बाइबल के मुख्य विषयों में से एक परमेश्वर का राज्य है। दानिय्येल ने भविष्यवाणी की थी कि इसे रोमी राज्य के दौरान खड़ा किया जाएगा। यूहन्ना, यीशु, प्रेरितों और सत्तर जनों ने यही प्रचार किया कि परमेश्वर (स्वर्ग) का राज्य आने वाला है (मत्ती 3:2; 4:17; 10:7; लूका 10:9, 11)।

स्वर्ग में लौटने से पहले यीशु ने जो अन्तिम बात की, वह परमेश्वर के राज्य की ही थी (प्रेरितों 1:4-8)। सामरियों को फिलिप्पुस का संदेश परमेश्वर के राज्य के बारे में ही था (प्रेरितों 8:12)। प्रेरितों के काम की पुस्तक में पौलुस का अन्तिम बार उल्लेख होने के समय वह राज्य का प्रचार कर रहा था (प्रेरितों 28:31), जो कि उसकी सेवकाई का स्कोप और बोझ था (प्रेरितों 20:25)।

परमेश्वर के राज्य का मूल्य उस खजाने की तरह है जो एक आदमी को खेत में मिला था। यह बहुत महंगे मोती की तरह है: जिसे यह मिला उसने अपना सब कुछ बेच दिया ताकि वह इसे खरीद सके (मत्ती 13:44-46)। राज्य के बड़ा होने के कारण हमारे जीवन इसे फैलाने की सेवा में दिए जाने चाहिए, ताकि राजाओं के राजा यीशु का आदर और आज्ञापालन हो।

पौलुस के साथ उन लोगों की तरह हम राज्य के सहकर्मी बन सकते हैं। पौलुस ने कुरिन्थियों को एक होने के लिए और सुसमाचार के प्रचारकों के पीछे नहीं होने (1 कुरिन्थियों 1:10-13), मसीह के सहकर्मियों (1 कुरिन्थियों 3:9) जो सभी एक ही ओर थे, एक होने को कहा। इस कारण उन्हें दूसरों और मसीह को निकालकर एक प्रचारक के साथ नहीं होना था।

आम तौर पर राज्य के लिए काम करने वालों के बीच में प्रतिस्पर्धा, ईर्ष्या और झगड़ा पाया जाता है। हमारी लड़ाई एक-दूसरे के साथ नहीं, बल्कि अपने सबसे बड़े शत्रु शैतान और उसकी सेवा करने वालों के साथ होनी चाहिए (इफिसियों 6:11, 12)।

मसीह के लिए इकट्ठे काम करते हुए हमें सच्चे मन से सेवा करनी आवश्यक है। यह जानते हुए कि उसने हमें हमारे पिछले पापों से उद्धार दिलाया है, हमें परमेश्वर के राज्य पर ध्यान लगाए हुए एक-दूसरे के साथ मिलकर काम करना आवश्यक है।

विश्वासयोग्य साथी (4:10-14)

पौलुस ने उनके विषय में जो उसके साथ काम कर रहे थे, अच्छी बातें कीं। हमें अपने

साथी मसीही लोगों के बारे में अच्छा बोलना चाहिए और इस प्रकार से व्यवहार करना चाहिए कि दूसरे हमारे विषय में अच्छा बोल सकें। अनुसरण करने के लिए दूसरों के लिए पौलुस के साथी अच्छे उदाहरण हैं।

विश्वासयोग्य मित्र। अरिस्तर्खुस एक मसीही का उदाहरण है, जो इफिसुस में क्रुद्ध भीड़ के सामने मंच से घसीटा जाने के बावजूद विश्वासयोग्य रहा (प्रेरितों 19:29)। वह पौलुस के साथ घूमा (प्रेरितों 20:4) और उसके साथ रहा, तब भी जब पौलुस कैदी था (प्रेरितों 27:2)। हर मसीही को अरिस्तर्खुस की तरह विश्वासयोग्य मित्र होना आवश्यक है। हम दूसरों के लिए ऐसे मित्र बनने का प्रयास करें।

सिद्ध भाई। मरकुस वह व्यक्ति था जो अविश्वसनीय जवान से प्रभु के उपयोगी सेवक बनने तक सिद्ध हो गया था। किसी को भी यीशु की सेवा करने से रोकने के लिए जवानी की गलतियों की अनुमति नहीं देनी चाहिए। इस प्रकार से बढ़ने वालों को स्वीकार किया जाना चाहिए और उनकी उन्नति के लिए सराहा जाना चाहिए।

एक और प्रोत्साहन देने वाला। यूस्तुस एक और उदाहरण है, जिसने दूसरों के साथ यीशु का अनुयायी बनने के लिए अपने पिछले धर्म को छोड़ दिया। अपनी यहूदी विरासत को छोड़ने के बाद वह यीशु के बारे में जानने में दूसरों की सहायता में जुट गया होगा। न केवल उसने और अन्य लोगों ने अपने धर्म को बदल लिया बल्कि उन्होंने पौलुस को भी प्रोत्साहित किया जो प्रभु का एक विलक्षण सेवक था।

पक्का दास। इपफ्रास को ''टीम वर्कर'' कहा जा सकता है। वह ऐसे व्यक्ति का अच्छा उदाहरण है, जो अपने लिए नहीं, बल्कि दूसरे के लिए काम करता था। पौलुस ने अपने बारे में ये बातें बताईं:

(1) उसने यीशु के दास या गुलाम के रूप में सेवा की (1:7; 4:12)। हम अपने नहीं हैं क्योंकि हमें यीशु के लहू से खरीदा गया था (प्रेरितों 20:28; 1 कुरिन्थियों 6:19, 20)। इस कारण हमें जो कुछ भी हम करते हैं, उसमें उसकी इच्छा को ढूंढ़ना आवश्यक है। विश्वासयोग्य सेवा आवश्यक है। सही बात कहना आवश्यक है, परन्तु सही काम करना अनिवार्य है (मत्ती 7:21; लूका 6:46)।

(2) उसने दूसरों के लिए सच्चे दिल से परिश्रम किया। निस्वार्थ सेवा का यीशु बेहतरीन उदाहरण है। उसने अपने आपको प्रसन्न करना नहीं चाहा, बल्कि उसने दूसरों की सेवा करनी चाही (रोमियों 15:3)। वह चाहे संसार का स्वामी है, परन्तु उसने अपने आपको दीन किया और एक सेवक का रूप ले लिया (मत्ती 20:25–28; फिलिप्पियों 2:7)। मसीही लोगों को इसी प्रकार से सेवा करना सीखना चाहिए।

(3) उसको दूसरों की चिंता थी। कुलुस्सियों के लिए इपफ्रास की सेवा उनकी बेहतरी के लिए उसकी दिलचस्पी के कारण आई। दिल से की जा सकने वाली सेवा से पहले सेवा करने वालों के दिल में स्वाभाविक चिंता का होना आवश्यक है। पौलुस के साथ परिश्रम करने वाले साथियों में लगता है कि विभिन्न मण्डलियों में विशेष दिलचस्पी ली थी। इपफ्रास की मुख्य चिंता कुलुस्से की कलीसिया थी, शायद इसलिए क्योंकि उसने मण्डली खड़ी करने में सहायता की थी और वहां पर भाइयों के बीच में काम किया था।

(4) उसने दूसरों के लिए सच्चे मन से प्रार्थना की। इपफ्रास कुलुस्सियों के साथ नहीं था परन्तु उनकी सहायता के लिए जो कुछ भी वह कर सकता था, उसने किया। विशेषकर उसने उनके लिए प्रार्थना की। विश्वासियों के लिए एक-दूसरे के लिए प्रार्थना करना आवश्यक है। अन्य मामलों में यह उनके लिए जिन से हम प्रेम करते हैं सहायता करने का बेहतरीन ढंग हो सकता है।

भाइयों में अन्तर। लूका के जीवन को देमास के जीवन से अलग किया जा सकता है। लूका यीशु और पौलुस का वफ़ादार रहा चाहे देमास संसार के लिए प्रेम के कारण छोड़ गया था (2 तीमुथियुस 4:10, 11)। मनुष्यों को खुली छूट है, क्योंकि परमेश्वर ने हमें अपनी पसन्द चुनने की आज़ादी दी है। पौलुस के साथ काम करने के बावजूद जो यीशु के सबसे बड़े सेवकों में से था, देमास अविश्वासी बन गया था। इसी प्रकार से यहूदा ने यीशु को छोड़ दिया। हर मसीही को पौलुस की चेतावनी पर विचार करना चाहिए: "इसलिए जो समझता है कि मैं स्थिर हूं, वह चौकस रहे; कि कहीं गिर न पड़े" (1 कुरिन्थियों 10:12)।

इस संसार के प्रेम में धन का प्रेम, अपने आपका प्रेम और सुख का प्रेम (1 तीमुथियुस 6:10; 2 तीमुथियुस 3:2, 4) शामिल हो सकते हैं। 1 यूहन्ना 2:15, 16 में इन खतरों को संक्षेप किया गया है:

> तुम न तो संसार से और न संसार में की वस्तुओं से प्रेम रखो: यदि कोई संसार से प्रेम रखता है, तो उसमें पिता का प्रेम नहीं है। क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात शरीर की अभिलाषा, और आंखों की अभिलाषा और जीविका का घमण्ड, वह पिता की ओर से नहीं, परन्तु संसार ही की ओर से है।

"सेवा सावधानी के साथ पूरी करना" (4:15-18)

अपने व्यक्तिगत अभिवादनों में पौलुस ने आग्रह किया कि इस पत्र को लौदीकिया की कलीसिया में पढ़ा जाए। उसने उस सेवकाई को पूरा करने के लिए जो अरखिप्पुस को मिली थी उसे प्रोत्साहित किया।

कलीसिया की चिंता। मसीह की कलीसियाओं में पौलुस की सर्वव्यापी दिलचस्पी थी। चाहे वह किसी मण्डली में गया हो या न। कुलुस्सियों के नाम अपने अन्तिम अभिवादनों और पत्र में उसकी आरम्भिक बातों से यह स्पष्ट होता है: "मैं चाहता हूं कि तुम जान लो, कि तुम्हारे और उन के जो लौदीकिया में हैं, और उन सब के लिए जिन्होंने मेरा शारीरिक मुंह नहीं देखा मैं कैसा परिश्रम करता हूं" (2:1)। कुरिन्थियों के नाम अपने पत्र में उन शारीरिक कठिनाइयों की बात करने के बाद जो उसने सही थीं, उसने कहा, "और और बातों को छोड़कर जिन का वर्णन मैं नहीं करता सब कलीसियाओं की चिन्ता प्रतिदिन मुझे दबाती है" (2 कुरिन्थियों 11:28)।

हमें मसीह की देह में वही चिंता और दिलचस्पी होनी चाहिए। हम मसीही लोगों के केवल स्थानीय परिवार का भाग ही नहीं हैं, बल्कि हम उस एक देह के जिसका सिर मसीह है, बड़ी संगति के सदस्य भी हैं। हम सब पृथ्वी पर यहां पर परमेश्वर के परिवार के लोग हैं और परमेश्वर के स्वर्गीय परिवार के रूप में स्वर्ग की स्वर्गीय सेनाओं के साथ सब इकट्ठा होंगे (इफिसियों 3:15; और केवल, लूका 2:4; प्रेरितों 3:25)। इसके कारण हमें हर जगह के मसीही लोगों के

लिए काम करना और प्रार्थना करनी चाहिए।

स्थानीय मण्डली हमारी सबसे बड़ी वफ़ादारी और समर्पण को शामिल कर लेगी, परन्तु हमें भी मसीह के सब लोगों में दिलचस्पी लेनी चाहिए। पौलुस ने संकेत दिया कि अन्य स्थानों की मसीह की कलीसियाएं रोम की कलीसिया को जानती हैं और उन्हें सलाम भेजती हैं (रोमियों 16:16)। हमें भी मसीह की सम्पूर्ण देह के लिए अपनी चिंता में आरम्भिक मसीही लोगों के उदाहरण को मानना चाहिए।

वचन के अधिकार के लिए सम्मान। पौलुस के पत्र पहली सदी की मसीह की कलीसियाओं के लिए महत्वपूर्ण थे और आज हमारे लिए भी इनका वही अधिकार होना चाहिए। उनका यह विनती करना कि उन्हें अन्य कलीसियाओं में दिया जाए और उन में पढ़ा जाए का अर्थ यह होगा कि उसे उनके महत्व की समझ थी।

उसे अपना संदेश मनुष्यों से नहीं, बल्कि यीशु मसीह से मिला था (गलातियों 1:11, 12)। पवित्र आत्मा के द्वारा यीशु द्वारा उस पर प्रकट किए जाने के कारण उसके पत्रों को पढ़ा जाना और समझा जाना आवश्यक था (2 कुरिन्थियों 1:13; इफिसियों 3:3-5)। उन्हें मनुष्यों की या पौलुस की सोच से कहीं अधिक माना जाना चाहिए था; उन्हें मसीह की आज्ञाओं के रूप में स्वीकार किया जाना आवश्यक था (1 कुरिन्थियों 14:37)।

पतरस ने पौलुस के पत्रों को उसे दी गई बुद्धि के परिणाम के रूप में समझा और स्वीकार किया। उसने उनके पवित्र शास्त्र की अन्य सब बातों के अधिकार की तरह परमेश्वर द्वारा दिया गया पवित्र शास्त्र होने के रूप में उन पर स्वीकृति की अपनी मोहर लगाई (2 पतरस 3:15, 16)।

हमें कलीसियाओं में पौलुस के पत्रों को वही अधिकार देना आवश्यक है। मसीही लोगों के लिए उन्हें पढ़ना, उनका अध्ययन करना और उनकी आज्ञा मानना आवश्यक है, क्योंकि उन में यीशु की आज्ञाएं हैं। हमें उन्हें वही सम्मान देना चाहिए जो हम मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना द्वारा लिखित सुसमाचार के विवरणों में यीशु के शब्दों को देते हैं।

उसके काम के लिए अपने तोड़ों का इस्तेमाल करने की लगन। पौलुस ने अर्खिप्पुस से अपनी सेवा को पूरा करने का आग्रह किया। यही विनती हम सब से की जा सकती है कि हम यीशु के लिए अपनी सेवा में पूरी तरह से जुट जाएं। हम सब से एक ही प्रकार से सेवा करने की उम्मीद या योग्यता होने की आवश्यकता नहीं है।

कहीं और पौलुस ने आरम्भिक मसीही लोगों को अलग-अलग दी गई योग्यताओं की बात की। "और उस ने कितनों को प्रेरित नियुक्त करके, और कितनों को भविष्यवक्ता नियुक्त करके, और कितनों को सुसमाचार सुनाने वाले नियुक्त करके, और कितनों को रखवाले और उपदेशक नियुक्त करके दे दिया" (इफिसियों 4:11)। सेवा की ऐसी स्थितियों में केवल वही लोग आते हैं जिन्हें सेवा के कार्य के लिए मसीही लोगों को तैयार करने में सहायता करना और मसीह की देह की उन्नति करना है (इफिसियों 4:12)। इन कार्यों में मसीह की पूरी देह नहीं है।

सब लोग, प्रेरित, भविष्यवक्ता या उपदेशक नहीं हैं (1 कुरिन्थियों 12:29)। प्रेरित कलीसिया की नींव थे (इफिसियों 2:20), जो पहले ही डाली जा चुकी है। आज हमें उनके ऊपर रद्दे रखने हैं जैसे आरम्भिक कलीसिया प्रेरितों की शिक्षा में बनी रही थी (प्रेरितों 2:42)। उन्हीं को आत्मा के द्वारा वचन दिया गया था (इफिसियों 3:5)। हर किसी से उपदेशक बनने

की उम्मीद नहीं की जाती (याकूब 3:1)। सिखाना आरम्भ करने से पहले व्यक्ति को सिखाने के लिए तैयार होना आवश्यक है (इब्रानियों 5:12)।

पौलुस ने रोमियों को जो भी सेवा जिसे वे मसीह के लिए करने के योग्य हों, उन्हें दी जाए उसमें लगन से लगने का आरम्भ किया।

> और जब कि उस अनुग्रह के अनुसार जो हमें दिया गया है, हमें भिन्न-भिन्न वरदान मिले हैं, तो जिस को भविष्यवाणी का दान मिला हो, वह विश्वास के परिणाम के अनुसार भविष्यवाणी करे। यदि सेवा करने का दान मिला हो, तो सेवा में लगा रहे, यदि कोई सिखाने वाला हो, तो सिखाने में लगा रहे। जो उपदेशक हो, वह उपदेश देने में लगा रहे; दान देने वाला उदारता से दे, जो अगुआई करे, वह उत्साह से करे, जो दया करे, वह हर्ष से करे (रोमियों 12:6-8)।

हम से सेवा के अपने-अपने स्थान ढूंढ़कर अपनी पूरी योग्यता से उन्हें पूरा करने की उम्मीद की जाती है। पौलुस ने लिखा, "भाईचारे के प्रेम से एक-दूसरे पर दया रखो; परस्पर आदर करने में एक-दूसरे से बढ़ चलो। प्रयत्न करने में आलसी न हो; आत्मिक उन्माद में भरे रहो; प्रभु की सेवा करते रहो" (रोमियों 12:10, 11)।

अर्खिप्पुस की चुनौती को व्यक्तिगत रूप से लिया जाना चाहिए: "जो सेवा प्रभु में तुझे सौंपी गई है, उसे सावधानी के साथ पूरी करना" (कुलुस्सियों 4:17)। यह उपयुक्त ताड़ना है कि हर मसीही सावधानी से विचार करे।

संक्षेप में, हमें उन सब के लिए जो मसीह की देह में है, दिलचस्पी लेने और उनकी चिंता करना आवश्यक है। पौलुस के निर्देशों को मसीह के अधिकार से समर्थन मिलता है और उनका आदर उसकी आज्ञाओं के रूप में किया जाना चाहिए। हम से सेवा के एक ही क्षेत्र में होने की उम्मीद नहीं की जाती, बल्कि हमें यीशु के लिए उन क्षेत्रों में लगन से काम करना चाहिए, जिसमें हम उसकी बेहतर सेवा कर सकते हैं।

टिप्पणियां

[1]डेविड एम. हेय, कोलोसियंस, अबिंग्डन न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (नैशविल्ले: अबिंग्डन प्रैस 2000), 156. [2]मत्ती 10:13, 14, 41; मरकुस 6:10, 11; लूका 9:4, 5; 10:8; इब्रानियों 11:31. [3]1 कुरिन्थियों 6:9, 10; 15:50; गलातियों 5:21; इफिसियों 5:5; देखें 1 थिस्सलुनीकियों 2:12. [4]देखें लूका 13:24; यूहन्ना 18:36; 1 कुरिन्थियों 9:25; कुलुस्सियों 1:29; 1 तीमुथियुस 6:12; 2 तीमुथियुस 4:7. [5]देखें रोमियों 5:2; 11:20; 14:4; 1 कुरिन्थियों 7:37; 10:12; 15:1; 2 कुरिन्थियों 1:24; इफिसियों 6:11, 13, 14. [6]रोमियों 16:5, 8, 9, 12; इफिसियों 6:21; कुलुस्सियों 1:7; 4:7, 9; 2 तीमुथियुस 1:2; फिलेमोन 1, 2, 16. [7]प्रेरितों 16:10-17; 20:5-15; 21:1-18; 27:1-8, 15-20, 27-29, 37; 28:1, 2, 10-16. [8]यूसबियुस चर्च हिस्ट्री 3.4; जेरोम ऑन इलस्ट्रियस मेन 3.7. [9]न्यू कैथोलिक इन्साइक्लोपीडिया, 2रा संस्क., संपा. थॉमस कारसन एंड जोअन केरिटो (न्यू यॉर्क: थॉमस गेल, 2003), 8:856 मेंआर. टी. मर्फी, "लूक, इवैन्जिलिस्ट, सेंट।" [10]जेरोम ऑन इलस्ट्रियस मेन 5.

[11]द न्यू इंटरनैशनल स्टैंडर्ड बाइबल इन्साइक्लोपीडिया, संशो. व संपा. ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1979), 1:180 में ए. एफ. वॉल्स, "अपोक्रिफल एपिस्टल।" [12]एक मसीही सम्प्रदाय का संस्थापक मैरिकन, जो कम से कम चौथी शताब्दी तक जीवित रहा, उसे चर्च द्वारा एक

नॉस्टिक और विधर्मी के रूप में मार डाला गया था। सुसमाचार के तीन विवरणों को उसके ठुकराने के कारण चर्च के लिए यह समझाना आवश्यक हो गया कि नये नियम के कैनन के रूप में किसे स्वीकार करना चाहिए और किसे नहीं। [13]हरबर्ट एम. कारसन, द एपिस्टल ऑफ़ पॉल टू द कोलोसियंस एंड फिलेमोन: ऐन इंट्रोडक्शन एंड कमैंट्री, द टिंडेल न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1960), 101–2. [14]द जौंडरवन पिकटोरियल इन्साइक्लोपीडिया ऑफ़ द बाइबल, संपा. मैरिल सी. टैनी (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस कं., 1975), 1:287 में डी. ई. हियबर्ट, ''अर्खिप्पुस।'' [15]एडुअर्ड लोहसे, कोलोसियंस एंड फिलेमोन, अनु. विलियम आर. पोहलमन एंड रॉबर्ट जे. कैरिस, हरमेनिया (फिलाडेल्फिया: फोर्टरेस प्रैस, 1971), 175, एन. 50. [16]रोमियों 1:7; 16:20, 24; 1 कुरिन्थियों 1:2; 16:23; 2 कुरिन्थियों 1:2; 13:14; गलातियों 1:3; 6:18; इफिसियों 1:2; 6:24; फिलिप्पियों। 1:2; 4:23; कुलुस्सियों 1:2; 4:18; 1 थिस्सलुनीकियों 1:1; 5:28; 2 थिस्सलुनीकियों। 1:2; 3:18; 1 तीमुथियुस 1:2; 6:21; 2 तीमुथियुस 1:2; 4:22; तीतुस 1:4; 3:15; फिलेमोन 3, 25.